Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

गुजरात में मध्यम वर्ग शिक्षित महिला और महिला संगठन (1880-1947)

Anubhav[1]* Dr. Raj Kumar[2]

[1] Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

[2] Associate Professor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सार - उन्नीसवीं सदी के अंत में महिलाओं के लिए शिक्षा आंदोलन का महत्वपूर्ण प्रभाव औपचारिक रूप से शिक्षित महिलाओं में पर्याप्त वृद्धि थी। हालांकि, महिलाओं शिक्षा आंदोलन समाज के निचले खंड नहीं किया था। 1920 तक, आंदोलन शहरों और कस्बों और समाज के उच्च वर्ग तक ही सीमित रहा, जैसा कि पहले चर्चा की गई थी। 1920 के बाद स्वतंत्रता संग्राम के लिए जनता को लामबंद करने की प्रक्रिया शुरू हुई। इस चरण के दौरान पूरे देश में गांवों और आदिवासी क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या में शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए गए थे। इसके परिणामस्वरूप, आदिवासी लड़कों और लड़कियों की औपचारिक शिक्षा प्रणाली तक पहुंच थी।

कीवर्ड – गुजरात, मध्यम वर्ग, शिक्षित महिला, महिला संगठन, 1880-1947

----------X----------

परिचय

महिला शिक्षा आंदोलन विशेष रूप से समाज के उच्च वर्ग की शहरी लड़कियां थीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि अधिकांश शिक्षण संस्थान शहरों और कस्बों में थे। 1889-1900 के आसपास बॉम्बे प्रेसीडेंसी में महिलाओं के लिए दस प्रशिक्षण स्कूल थे। उनमें से एक अहमदाबाद शहर में था जिसका नाम महालक्ष्मी महिला प्रशिक्षण कॉलेज था। हम पिछले अध्याय में इस संस्था के महत्व पर पहले ही चर्चा कर चुके हैं।[1] इस संस्था में उच्च जाति की महिलाएं और आसपास रहने वाली महिलाएं अध्ययन करती थीं। फिर भी, 1850 में अपनी स्थापना के बाद से महिलाओं के लिए औपचारिक शिक्षा में जबरदस्त वृद्धि हुई थी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक बॉम्बे प्रेसीडेंसी के शैक्षणिक संस्थानों में लड़कियों की संख्या 82,163 थी, हालांकि उनमें से अधिकांश समाज के शहरी वर्ग से थीं। ये महिलाएं यानी औपचारिक रूप से मध्य और उच्च वर्ग की शिक्षित महिलाएं इस अवधि के दौरान भारतीय समाज का एक अलग वर्ग बन गईं।[2]

शिक्षित महिलाओं के संबंध में विक्टोरियन आदर्श

महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाओं को मजबूत करने में विक्टोरियन आदर्शों के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इन आदर्शों ने विशेष रूप से पश्चिमी शिक्षित पुरुषों और महिलाओं के बीच एक दृष्टिकोण परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस बिंदु को यहां लाना महत्वपूर्ण है क्योंकि विक्टोरियन आदर्श भारत में लड़कियों के स्कूलों के पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग थे।

महिलाओं के संबंध में, इस काल के विक्टोरियन साहित्य ने महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाओं पर जोर दिया। इस अवधि के विक्टोरियन साहित्य ने वास्तव में लैंगिक भेदभाव और महिलाओं की आदर्श घरेलू भूमिकाओं के सांस्कृतिक विचारों पर कब्जा कर लिया। मध्यवर्गीय संस्कृति पर वाल्टर अन्स्टीन के अध्ययन में महिलाओं की घरेलू भूमिकाएँ जैसे दूसरों की देखभाल करना और उनकी सेवा करना, उन्नीसवीं सदी के इंग्लैंड के पूर्वार्द्ध में मनाया गया। हालाँकि, यह देखभाल और सेवा की धारणा थी जिसने कई मध्यम वर्ग की शिक्षित अंग्रेजी महिलाओं को मिशनरी

www.ignited.in

कार्यों, दान, शिक्षण और नर्सिंग जैसे सामाजिक कार्यों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया[3]।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध की गुजरात की मध्यवर्गीय महिलाएँ

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में गुजरात की कुछ प्रमुख शिक्षित महिलाओं का केस स्टडीज। इन महिलाओं ने सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाई लेकिन गुजराती समाज में महिलाओं की भूमिका की पारंपरिक भूमिकाओं के प्रति उनकी धारणा वही रही। उनके विचार और विचार बड़े पैमाने पर समाज के विपरीत नहीं थे। हालांकि, उन्होंने कम उम्र में शादी और विधवा होने की प्रथा की निंदा की क्योंकि ये महिलाओं की शिक्षा और मुक्ति के लिए प्रमुख बाधाएं थीं। 'इस अर्थ में जागरूकता की इन महिलाओं को महिलाओं के शिक्षा और महिलाओं के चल रहे आंदोलनों इष्ट से प्रेरित' रों सुधारों। ये महिलाएँ हरकोर सेठानी (1820-1876), पार्वती कुंवर (1831-1881), गंगाबेन प्राणशंकर (1868-1939), जीवकोर (1852-1916), कृष्णगौरी हीरालाल रावल (1871-1950) विद्यागौरी नीकांत (1876- 1958) और शारदा मेहता (1882-1970)[4]

गुजरात की पहली महिला लेखिका और एक उद्यमी, गंगाबेन प्राणशंकर याज्ञनिक (1858- 1939), इस अवधि की एक और महत्वपूर्ण महिला थीं। उन्होंने हरकोर सेठानी की तरह गुजरात में महिला शिक्षा की प्रगति में योगदान दिया। गंगाबेन बारह साल की उम्र में विधवा हो गईं। उसकी बहन ने गंगा को स्कूल भेजा। जैसे ही उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की, गंगा को प्राथमिक विद्यालय में सहायक शिक्षक की नौकरी मिल गई[5] आगे की पढ़ाई के लिए वह अहमदाबाद के महालक्ष्मी फीमेल ट्रेनिंग कॉलेज गईं। उसके दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत के कारण, वह विक्टोरिया जुबली लड़की के सिर रखैल के रूप में नियुक्त किया गया था' स्कूल। गंगा वावोल छोड़कर 1887 में मनसा आ गईं। वहां वे एक स्कूल की प्रधानाध्यापिका बनीं।

गुजरात की महिला संगठन-1888-1920

शिक्षित मध्यवर्गीय शहरी महिलाओं की बढ़ती सामाजिक भागीदारी ने महिला संगठनों के गठन के लिए आधार तैयार किया। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में बहुत कम संख्या में महिला संगठनों का उदय हुआ। हालाँकि, इन संगठनों का गठन और समर्थन पुरुष समाज सुधारकों ने किया था। इन संगठनों के सदस्य आमतौर पर समाज के उच्च वर्ग की महिलाएं थीं जो सामाजिक गतिविधियों में शामिल थीं[6] इस काल के अधिकांश महिला संगठन राजनीतिक गतिविधियों में शामिल नहीं थे बल्कि समाज सुधार संघों की सहायक इकाइयों के रूप में काम करते थे। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में गुजरात की सबसे प्रारंभिक महिला संघ गुजरात लेडीज क्लब-1888 थी। शिक्षित गुजराती महिलाओं के लिए एक सामान्य स्थान की आवश्यकता के कारण 1888 में अहमदाबाद में लेडीज क्लब की स्थापना हुई। अधिकांश शिक्षित गुजराती महिलाओं के पास साझा करने के लिए सामान्य चीजें थीं जैसे कि महिला शिक्षा, बाल विवाह और महिलाओं के अन्य मुद्दों पर विचार। इन महिलाओं के बीच एक ऐसा मंच बनाने की आवश्यकता महसूस की गई जहां उनके बीच सामाजिक और बौद्धिक बातचीत हो सके। लेडीज क्लब की स्थापना से पहले, अंग्रेजी महिलाओं के साथ शिक्षित गुजराती महिलाओं की महिलाओं की बैठकें आम थीं। ऐसी ही एक महिला सभा 1874 में प्रख्यात अंग्रेजी महिला मिस के बंगले में हुई थी। इस बैठक में महीपत्रम रूपराम की पत्नी पार्वती कुंवर अनुपस्थित थीं[6-7] इसलिए पार्वती कुंवर को यह कहते हुए एक संदेश भेजा गया कि, 'मुझे खेद है कि आप आज दोपहर महिला सभा में नहीं आ पा रही हैं। हालाँकि, अब मैं आपको एक छोटा सा स्मरण भेजता हूँ जो मिस कारपेंटर ने मुझे आपके लिए दिया था। उसने मुझसे अहमदाबाद में लड़कियों के स्कूलों के बारे में कई पूछताछ की और मुझसे तुम्हारे बाद भी पूछा। इस तरह की लेडीज मीटिंग के बढ़ने से लेडीज क्लब की स्थापना हुई। जब लेडीज क्लब की स्थापना हुई तो पार्वतीकुंवर, हरकुंवर और शिवकाशी जैसी औपचारिक और गैर-औपचारिक रूप से शिक्षित महिलाओं की पहली पीढ़ी नहीं रही। विद्यागौरी नीलकंठ जैसी महिलाएं जो उच्च शिक्षित थीं और पश्चिमी देशों में महिलाओं के आंदोलन के बारे में जागरूक थीं, उन्होंने लेडीज क्लब की स्थापना के पीछे थे। यह क्लब सोराभजी सिस्टर्स आई ब्लिस मैरी, मिस फुलोज़, मिस कॉर्नेलिया, मिस एलिस और मिस शोजी का भी परिणाम था। इन बहनों ने प्रख्यात अंग्रेजी महिलाओं और शिक्षित गुजराती महिलाओं से संपर्क किया। इन महिलाओं के सामूहिक प्रयासों से लेडीज क्लब की स्थापना हुई[7]

क्लब प्रकृति में महानगरीय था क्योंकि इसमें हिंदू, पारसी, मुस्लिम और अंग्रेजी सदस्य थे। क्लब ने टेनिस, बैडमिंटन और चाय पार्टियों जैसी बाहरी गतिविधियों को प्रोत्साहित किया। इसलिए आधुनिक सार्वजनिक संस्थानों में महिलाओं की भागीदारी की दिशा में लेडीज क्लब एक छोटी शुरुआत थी। इस अवधि का एक महत्वपूर्ण महिला संघ, जिसने राजनीतिक गतिविधियों में भी भाग लिया, गुजराती हिंदू स्त्री मंडल था।' इस एसोसिएशन की स्थापना 1903 में

www.ignited.in

गुजराती शेटिया और सर गोकुलदास पारेख, सर विजभुकंदस आत्माराम, सर नरंदास पुरुषोत्तमदास जैसे सुधारकों की पहल पर की गई थी। सर लल्लूभाई शामलदास और करसनदास मुईजी। संगठन के पहले अध्यक्ष जमनाबाई नगीनदास सक्कई थे।[8] इसमें लेडी धुन्कोवरबाई पुरुषोत्तमदास ठाकुरदाद, लेडी परसनबाज गोकुलदास पारेख, सुधारक सेठिया की पत्नियों जैसे मंडल को प्रायोजित करने वाले पुरुषों की पत्नियां भी शामिल थीं। इसकी सदस्यता को खुले में फेंक दिया गया था ब्राह्मण, बनिया, जैन, भाटिया, लोहाना और क्षत्रिय से संबंधित महिलाएं।

गुजरात की महिला संगठन: 1920-1947

इस अवधि में महिलाओं को मजबूत बनाने के गवाह' सभी देश भर में रों संगठनों। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के विपरीत, इस अवधि के महिला संगठनों की स्थापना स्वयं महिलाओं ने की थी। महिलाओं की समस्याओं, उनके समाधान और कार्यों को अब महिला संगठनों ने अपने हाथ में ले लिया। इसलिए, सही मायने में इस अवधि की महिला संगठन पुरुष आयोजकों के संरक्षण में नहीं थे। जैसा कि पिछले अध्याय में चर्चा की गई थी, गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं को दृश्यमान बनाया। उन्होंने महिलाओं की सहनशक्ति और आत्म-प्रतिरोध शक्ति को महत्व दिया। महिला की इन शक्तियों को चौनलाइज़ करने के लिए गांधी ने समाज के सभी वर्गों की महिलाओं को सत्याग्रह आंदोलन में लामबंद किया। गांधी ने महिलाओं को दमनकारी और दमनकारी व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई के रूप में सत्याग्रह आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, उन्होंने आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को अर्थ दिया[9] सत्याग्रह आंदोलन की रचनात्मक गतिविधियों के लिए महिला संगठन एक प्रमुख एजेंसी के रूप में उभरे। इन रचनात्मक गतिविधियों शामिल धरना, रोक, महिलाओं' शिक्षा और महिलाओं के सुधारों। अतः इस प्रकार सामाजिक सुधार आन्दोलन राष्ट्रीय आन्दोलन में समाहित हो गया। महिला संगठनों ने बड़े पैमाने पर सामाजिक विकास गतिविधियों की कमान संभाली।

1917 से 1927 की अवधि में राष्ट्रीय स्तर के महिला संगठनों का उदय हुआ। इस अवधि के प्रमुख राष्ट्रीय महिला संगठनों में से तीन थे: महिलाएं रों इंडियन एसोसिएशन, भारत में महिलाओं की राष्ट्रीय परिषद और अखिल भारतीय महिला' रों सम्मेलन । इन महिला संगठनों की क्षेत्रीय स्तर पर शाखाएँ थीं। राष्ट्रीय स्तर की महिला संगठनों में सबसे महत्वपूर्ण एआईडब्ल्यूसी थी। यह इस तथ्य के कारण है कि समाज के सभी वर्गों की महिलाओं ने इस संगठन का प्रतिनिधित्व किया। इस संगठन की स्थापना 1927 में मार्गरेट कजिन्स से संबंधित अन्य महिलाओं के प्रयासों से हुई थी। इस संगठन की स्थापना की योजना तब आई जब बंगाल में सार्वजनिक निर्देश के निदेशक श्री ओटेन ने महिलाओं से यह तय करने का आग्रह किया कि भारतीय लड़कियों के लिए किस तरह की शिक्षा उपयुक्त है। मार्गरेट कजिन्स ने पूरे भारत में महिला नेताओं को परिपत्र पत्र भेजकर सुझाव दिया कि वे शैक्षिक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए स्थानीय सम्मेलन आयोजित करें। प्रत्येक सम्मेलन पूना में आयोजित होने वाले अखिल भारतीय सम्मेलन में प्रस्तुति के लिए महिला शिक्षा पर एक ज्ञापन तैयार करेगा। इस संगठन की पहली बैठक पूना में हुई थी।[10]

गुजरात संविधान सम्मेलन, 8 जनवरी, 1928 (अंश) संकल्प

यह सम्मेलन जनता और शिक्षकों के सामने शिक्षा के आदर्श को जीवन के उद्देश्य के रूप में रखता है न कि केवल आजीविका कमाने के साधन के रूप में। अध्यक्ष से यह सम्मेलन एक योजना तैयार करने के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों की एक समिति नियुक्त करता है; (बच्चों के विशेष व्यक्तित्व के विकास के संबंध में, और राष्ट्रीय विकास के अनुकूल), निश्चित रूप से निर्देश, शिक्षण और परीक्षा का तरीका, लड़कों और लड़कियों के लिए, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय में और साथ ही पुरुषों और महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कॉलेजों में, और प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में सुधार शुरू करने के लिए इसे 31-3-1928 से पहले सरकार को भेजने के लिए।[11]

यह सम्मेलन सरकार से अनुरोध करता है कि वह प्राथमिक शिक्षा अधिनियम और उसी अधिनियम के संबंध में सरकार द्वारा बनाए गए नियमों और विनियमों में संशोधन करने के लिए स्थानीय शैक्षणिक संस्थानों और प्रतिष्ठित शिक्षाविदों के प्रतिनिधियों की एक समिति नियुक्त करे। यह सम्मेलन सरकार से नगरों में मनोरंजन कर की आय नगर पालिकाओं को देने का आग्रह करता है, जो शिक्षा के प्रसार के लिए गिरवी रखी गई थी और अनुरोध है कि नगर पालिकाओं को इसके लिए पूछना चाहिए [10-11]

गुजरात में महिलाओं की सामाजिक स्थिति जाति से जाति में भिन्न थी। गुजरात में जातियों और उपजातियों के रूप में सामाजिक स्तरीकरण सबसे अधिक था। वहाँ, चार शास्त्रीय जातियों या चतुर्वर्ण के बजाय, अठारह प्रमुख जातियाँ या इसके कई उप-विभाजन मौजूद थे। सामाजिक प्रथाओं और

www.ignited.in

रीति-रिवाजों के संदर्भ में प्रत्येक जाति अपेक्षाकृत भिन्न थी। जैसा कि हम देख चुके हैं, पर्दा प्रथा मुख्यतः राजपूत समुदाय के सर्वोच्च तबके में प्रचलित थी। हालांकि, निचले राजपूत समुदायों में महिलाएं बड़े पैमाने पर घर के निजी क्षेत्र तक ही सीमित नहीं थीं। हालाँकि, कुछ राजपूत कुलों में मुख्य रूप से जडेजा में पाए जाने वाले कुछ सामाजिक सम्मेलनों ने कन्या भ्रूण हत्या की प्रथा को जन्म दिया। इसके विपरीत, गुजरात के ब्राह्मण समुदाय के बीच इन राजपूतों के रीति-रिवाजों और प्रथाओं का शायद ही पालन किया जाता था। गुजरात के सर्वोच्च ब्राह्मण नागरों ने शिक्षा और सामाजिक सम्मान के मामले में महिलाओं को पर्याप्त स्वतंत्रता प्रदान की। पूर्व औपनिवेशिक गुजरात में नागर महिलाएं सबसे अधिक शिक्षित महिलाएं थीं। बनियों में, जनियों ने महिलाओं को शिक्षा के संबंध में स्वतंत्रता प्रदान की। हालाँकि, लाडवा कुनबी जैसे कृषक समुदायों में महिलाओं की स्थिति कन्या भ्रूण हत्या की प्रथा के कारण अपेक्षाकृत कम थी। बनिया जाति समूहों के मध्य और निचले तबके ने शिल्पकार समुदाय का गठन किया। इस समूह की महिलाएं यानी शिल्पकार समुदाय, पूर्व औपनिवेशिक काल के दौरान गुजरात के शिल्प उद्योग में सबसे बड़ा कार्यबल था[12] अधिकांश उच्च जातियों में अर्थात। राजपूत, ब्राह्मण और बनिया, विधवाओं से संबंधित रीति-रिवाज व्यापक रूप से प्रचलित थे। हालाँकि, बाल विवाह की प्रथा गुजरात की सभी जातियों और समुदायों में सार्वभौमिक रूप से प्रचलित थी। बाल विवाह और विधवापन की ये प्रथा ब्रिटिश काल में महिलाओं के लिए औपचारिक शिक्षा के विकास में सबसे बड़ी बाधा बनकर उभरी। अब हम गुजरात में महिलाओं के लिए पूर्व औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली पर बहस की ओर रुख करेंगे। 1826-1830 के दौरान तैयार किए गए गुजरात प्रांत के स्वदेशी स्कूलों पर लगभग सभी सर्वेक्षण रिपोर्ट ने महिला शिक्षा के अस्तित्व के तथ्य की ओर इशारा किया। ये सर्वेक्षण रिपोर्ट काफी हद तक इस अर्थ में पक्षपाती थीं कि केवल संस्थागत शिक्षा को ध्यान में रखा गया था। पक्षपाती स्वदेशी शिक्षा प्रणाली पर उपनिवेशवादियों की आंशिक समझ का परिणाम हो सकता है[13]

महिला मुक्ति पर समकालीन विचार

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी की महिला बुद्धिजीवियों ने लगातार महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए प्रयास किया। हालांकि, वे सामाजिक क्रांति लाने की इच्छा नहीं रखते थे या परिवार में बहुत ही बुनियादी संबंधों पर सवाल नहीं उठाते थे। महिलाओं ने घर के बाहर अध्यापन, नर्सिंग, दाई का काम और बाद में कार्यालय की नौकरियों जैसे व्यवसायों को अपनाया। इनमें से अधिकांश नौकरियों को महिलाओं के पालन-पोषण और देखभाल करने वाले स्वभाव के लिए उपयुक्त माना गया[14]

गांधीवादी काल के दौरान पूरे देश में क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर की महिला संगठनों का उदय होने लगा। इन संगठनों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि इन संगठनों की स्थापना और संचालन महिलाओं द्वारा किया जाता था। इसलिए समस्याओं के निर्णय और कार्य स्वयं महिलाओं द्वारा लिए जाते थे। इस अवधि के दौरान महिला संगठन एक मजबूत एजेंसी के रूप में उभरे। ये संगठन केंद्रीय स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करने में सक्षम थे। गुजरात में इस काल की महत्वपूर्ण महिला संगठन ज्योतिसंघ और विकास गृह थे। हालाँकि, इन महिला संगठनों का उद्देश्य मुख्य रूप से महिलाओं में राष्ट्रवादी भावनाओं को जगाना रहा।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में महिला बुद्धिजीवी वर्ग ने महिला शिक्षा के मुख्य उद्देश्य के रूप में महिलाओं की पारिवारिक भूमिकाओं पर जोर देना जारी रखा। गांधीवादी काल के दौरान महिला शिक्षा के उद्देश्यों में महिला बुद्धिजीवियों के बीच बदलाव देखा गया था। महिला संगठन विशेष रूप से अखिल भारतीय महिला संघ ने महिला शिक्षा के उद्देश्य के रूप में समाज सेवा पर जोर देना शुरू किया। लड़कियों 'इस अवधि के पाठ्यक्रम समाज सेवा पाठ्यक्रम पर जोर दिखाया। इसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आंदोलन के ढांचे के भीतर सामाजिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई। समाज सेवा पर इस जोर ने समाज सेवा क्षेत्र में शिक्षित महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों का सृजन भी किया[15]

निष्कर्ष

अध्ययन में देखा है कि गुजरात में औपचारिक शिक्षा के अभाव के बावजूद, महिलाओं ने विभिन्न गैर सामान्य माध्यमों से शिक्षा प्राप्त की। इनमें से महत्वपूर्ण थे परिवार, जाति और मौखिक परंपरा में समाजीकरण की प्रक्रिया। समाजीकरण प्रक्रिया ने आम तौर पर एक व्यक्ति को सामाजिक व्यवहार में प्रशिक्षित किया। इस प्रकार, समाजीकरण के माध्यम से एक लड़की को घरेलू मामलों पर प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। बाद में, समाजीकरण के एक भाग के रूप में, समारोहों और अनुष्ठानों ने लड़कियों में नारीत्व, मूल्यों और सांस्कृतिक लक्षणों के आदर्शों की धारणाओं को आत्मसात किया। शादी और कढ़ाई जैसे शुभ कार्यों के दौरान

www.ignited.in

किए जाने वाले घरेलू चित्र जैसे कला और शिल्प युवा लड़कियों को बड़ी महिलाओं द्वारा सिखाया जाता था।

संदर्भ

1. हांडू, जवाहरलाल; 'फ़ोक लिटरेचर ऑफ गुजरात', मैसूर, 1999। हेमासथ, एच. चार्ल्स 'इंडियन नेशनलिज्म एंड हिंदू सोशल रिफॉर्म', कलकत्ता, 1964।
2. इरविन, जॉन और मार्गरेट हॉल, 'इंडियन एम्ब्रायडरीज', अहमदाबाद, 1972। जैक्स डेरिडा, 'ऑफ ग्रामेटोलॉजी', गायत्री चक्रवर्ती स्पिवक द्वारा अनुवादित, न्यूयॉर्क, 1974।
3. जेबी कृपलानी; 'गांधी' हिज लाइफ एंड थॉट', बॉम्बे, 1958।
4. मुखर्जी, हरिदास और उमा, 'राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन की उत्पत्ति, 1905-10', कलकत्ता, 1957।
5. नटराजन, एस।, 'ए सेंचुरी ऑफ सोशल रिफॉर्म इन इंडिया', बॉम्बे, 1959। ओ' मैले, एलएसएस, 'मॉडर्न इंडिया एंड द वेस्ट', लंदन, 1968।
6. रमा मेहता; 'द वेस्टर्न एजुकेटिड हिंदू वूमेन', बॉम्बे, 1986। सोराबजी, कॉर्नेलिया, 'इंडिया कॉलिंग', लंदन, 1938।
7. थॉमसन, ई., और गैरेट, जीटी, 'भारत में ब्रिटिश शासन का उदय और पूर्ति', 1980।
8. लोंकर रवींद्र लक्ष्मण, 'महाराष्ट्र में पश्चिमी विचारधाराओं के लिए बौद्धिक प्रतिक्रिया इतिहास के विशेष संदर्भ के साथ: 1832-1874', 2002, एसपी कॉलेज, पुणे।
9. रामलाल, नवनीतलाल, 'अर्वचिन गुजराती शिक्षण और सवा वर्ष 1935'। त्रिवेदी, नवलराम, 'समाज सुधारानु रेखा दर्शन', 1934
10. जावेरी, कृष्णलाल, 'गुजराती साहित्य न वधु मार्गसुचक स्तम्भो', 1930।
11. यंग इंडिया, खंड 4 से 13, 1922 से 1932, अहमदाबाद, नवजीवन, 1920-1935, अहमदाबाद।
12. भट्ट, गणपत्रम, 'बाल लगान थी थीती हाथ, 1910, अहमदाबाद।
13. बड़ौदा राज्य का राजपत्र, खंड 1, 1923।
14. मिस मैरी कारपेंटर, 'सिक्स मंथ्स इन इंडिया', लंदन, 1868।
15. शिक्षा विभाग के निदेशक, बॉम्बे, शैक्षिक विभाग की निर्देशिका 1892-93 और 1893-94 के लिए।

Corresponding Author

Anubhav*

Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in